जन–जागृति व कृषक आन्दोलन के प्रणेता विजय सिंह पथिक

डॉ. कैलाश चन्द गुर्जर,
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)

भारत में आरम्भ से ही ग्रामीण आबादी बहुसंख्यक है। अतः भारत गाँवों का देश है। गाँधी जी में भी कहा था कि भारत की आत्मा गाँवों में बस्ती है। ग्रामीणजन जीविकोपार्जन के लिए कृषि व प"ुपालन पर निर्भर होते हैं। प्राचीन काल से आज तक किसान अपनी मेहनत से फसलों का उत्पादन कर राष्ट्र के लिए आत्मनिर्भरता एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता आ रहा है। परन्तु किसान की द"ाा और दि"ाा के लिए प्रारम्भ से ही अनेक चुनौतिया खड़ी दिखाई देती हैं।

राजा व सामन्तों के शासनकाल में किसानों का शोषण, लाग–बाग, व लगान के अधिक भार से किसान की कमर तोड़ दी जाती थी। किसान संगठित व f"ाक्षित ना होने की वजह से अपनी समस्या उचित ढ़ग से शासकों तक नहीं पहुंचा पाते थे। शासकों व उनके कारिन्दों द्वारा प्रताड़ित होते रहे। सम्पूर्ण भारत वर्ष में किसान की वेदना देखी जा सकती हैं।

ब्रिटि"ा भारत की बात करे तो स्थिति और अधिक भयावह दिखाई देती हैं। राज्य की आय का स्थायी स्त्रोत भू–राजस्व ही होता था तथा राज्य की आय का अधिका"ा भाग भी लगान से ही आता था। अतः अंग्रेजों ने अनेक प्रकारों से किसानों का शोषण किया। इसी प्रकार राजा, सामन्त या जागीदार भो किसानों का शोषण करता नजर आता हैं। मेहनत किसान की तथा ऐ"ाोआराम की जिन्दगी शासकों की ऐसी विडम्बना के अन्नदाता किसान को रही है।

ऐसी ही स्थिति राजपूताने की विभिन्न रियासतों में भी रही हैं। किसान शोषण का पात्र बना हुआ है। किसान को आवाज को बुलन्द करने का कोई मंच या संगठन नहीं था। ऐसे समय में विजयसिंह पथिक एक आ"ाा की किरण किसानों के लिए दिखाई देते हैं। राजा व जागीरदारों से किसानों के शोषण का संगठित विरोध पथिक की देन है। सम्पूर्ण भारत वर्ष में सबसे पहला संगठित किसान आन्दोलन बिजोलिया का था जो पथिक की याद दिलाता है। पथिक ने किसान की पीड़ा व दर्द को महसूस किया तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी किसान को जागृत व संगठित कर शोषण के विरूद्ध आन्दोलन के लिए तैयार किया। इसके प"चात् दे"ा के विभिन्न राज्यों में किसान आन्दोलन संगठित रूप से किए जाने लगे।

महात्मा गांधी ने भी पथिक की संगठनात्मक क्षमता, नेतृत्व के गुण तथा बिजोलिया सत्याग्रह आन्दोलन से प्रभावित होकर कालान्तर मे सत्याग्रह व जन साधारण को संगठित कर राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ने को काम किया। पथिक स्वयं एक दे"ाभक्त किसान परिवार से ताल्लुक रखते थे, अतः किसानों की वेदना को महसूस करते थे। संघर्ष, त्याग व साहस के साथ पथिक बड़े से बड़े जुल्म व अत्याचार के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए जाने जाते है। पथिक ने किसानों की दुर्दशा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलन करन की पृष्ठभूमि तैयार की। कालान्तर मे विभिन्न राज्यों में अनेक किसान आन्दोलन हुए जो बहुसंख्यक किसानों के लिए राहत देने वाले सिद्ध हुए।

विजयसिंह पथिक का मूल नाम भूपसिंह था। इनका जन्म 27 फरवरी, 1888 ई. को उत्तरप्रदे"ा के गुठावली ग्राम (बुलन्द"ाार) में हुआ था। उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि दे"ासेवा से जुड़ी हुई थी। उनक दादा जी इन्दरसिंह मालागढ़ रियासत के नवाब वलीदाद खाँ के दीवान व सेनापति थे। आजादी की प्रथम लड़ाई 1857 ई. में भूपसिंह के दादाजी इन्दरसिंह का बलिदान तथा पिता जी हम्मीर सिंह का योगदान उनके लिए प्रेरणास्त्रोत रहे है। उनकी माताजी कँवल कंवर एक साहसी व वीर

महिला थी। अतः पथिक को त्याग, संघर्ष, बलिदान, वीरता, दे"ाभक्ति की भावना आदि विरासत में ही मिले थे।

उनका प्रारभिक जीवन कठिनाईयों एवं संघर्ष से भर हुआ था। माता–पिता को निधन जल्दी हो जाने के कारण पथिक को कुछ समय अपने चाचा बलदेव सिंह के पास इन्दौर तथा कुछ समय अपने बहनोई के पास कि"ानगढ़ (राजस्थान) में रहना पड़ा था। अतः उच्च ि"ाक्षा का अवसर नहीं मिला, परन्तु व्यवहारिक जीवन की ि"ाक्षा उन्हें बखूबी थी।

बाल्यकाल से ही दे"ा प्रेम का जज्बा पथिक मे कूट–कूट कर भरा पड़ा था। इसकी परिणती यह रही की सचिन्द्र सान्याल व रासबिहारी बोस के सम्पर्क में आने के प"चात् पथिक क्रांतिकारी दल के सदस्य बन गये। भारत में ब्रिटि"ा प्रांतों में तो शस्त्र कानून कठोरता से लागू किए गए थे परन्तु दे"ाी राज्यों में लागू नहीं थे। रासबिहारी बोस ने बालमुकुन्द व भूपसिंह को राजस्थान भेजा था। राजस्थान में अजमेर रेलवे का बड़ा कारखाना था। पथिक अजमेर आए यहाँ रेलवे वर्क"ाॉप में नौकरी की ताकि तोड़ेदार बन्दूकों की व्यवस्था क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए की जा सके। यहाँ भूपसिंह ने अस्त्र–"ास्त्र बनाने व ठीक करने वाले मिस्त्रियों को क्रांतिकारी संगठन से जोड़ा तथा अस्त्र–"ास्त्रों का एक कारखाना भी स्थापित किया। इसी दौरान यहाँ के राजाओं से सम्पर्क स्थापित हुआ। पथिक खरवा नरे"ा ठाकुर गोपालसिंह के निजी सचिव भी बने।

इस प्रकार पथिक का प्रारम्भ से ही राजस्थान से लगाव रहा। क्रांतिकारी युवाओं द्वारा क्रांतिकारी की योजना बनाई गई, परन्तु इनकी भनक (सूचना) सरकार को लग गई। फलस्वरूप क्रांतिकारी की धरपकड़ शुरू हो गई। भूपसिंह व ठाकुर गोपाल सिंह को टाटगढ़ के किले में नजरबन्द कर दिया गया। कुछ समय प"चात् लाहौर षड्यन्त्र केस में भूपसिंह का नाम सामने आया तो उन्हें लाहौर भेजने की योजना बनायी गयी। इसको भनक लगते ही भूपसिंह ने सोचा जेल की जिन्दगी से बेहतर राष्ट्रीय की सेवा करके ही जीवन की सार्थकता को सिद्ध किया जा सकता

है। भूपसिह अपना भेष (पहनावा) बदलकर टाटगढ़ की जेल से फरार हो गया। इसकी सूचना से आस–पास के इलाके में सनसनी फैल गई। राज्य सरकार व पुलिस द्वारा सघन तला"ाी शुरू की गई। ऐसे हालात में ब्रिटि"ा राज्यों में जाना तो खतरे से खाली नहीं था अतः दे"ाी राज्यों में ही रहना पथिक के लिए उचित था क्योंकि पथिक का मानना था कि भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन की सफलता के लिए देशी रियासतों को मजबूत किया जाए।[1] परिणामस्वरूप पथिक ने यही टाटगढ़ के जंगलों में अपना समय बिताना प्रारम्भ कर दिया। यहीं आस–पास के इलाके से जन–संघर्ष व जन–जागृति का मार्ग अपनाकर आजादी के आन्दोलन को मजबूत करने की ठान ली। पुलिस द्वारा गिरफ्तारी का डर भी था। यहाँ पर उन्होंने अपने बाल व दाढ़ी बढ़ा ली। यही से गुरूला गाँव पहुँचे। वहाँ के ठाकुर साहब ने उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी ली और यहाँ पर भूपसिंह ने अपना नाम बदल कर विजयसिंह पथिक रख लिया ताकि राज्य व पुलिस उसकी पहचान ना कर सके। 'पथिक' का आ"ाय हैं चलते जाना ..... चलते जाना अर्थात् जनता के लिए स्वतंत्रता, समानता व न्याय के मार्ग पर चलते रहना।

यहाँ पर खुफिया तंत्र से पथिक को खतरा दिखाई देने लगा। अब पथिक वहाँ से निकलकर कांकरोली के पास भाणा ग्राम में आकर रहने लगे। यहाँ पर भी युवाओं के दल बनाकर लोगों को जागृत करने लगे। पथिक दूरदृष्टि थे वे जानते थे कि जन–जागृति के लिए ि"ाक्षा का प्रचार–प्रसार आव"यक है। अतः यहाँ पर एक पाठ"ाला स्थापित की।[2] इसके प"चात् विभिन्न स्थानों पर पाठ"ालाएँ, व्यायाम शालाएँ स्थापित कर ि"ाक्षा व संस्कारों का प्रचार–प्रसार किया गया। ओछड़ी के सरदार भूपालसिंह के पास एक वर्ष में अधिक समय तक रहे तथा चितौड़ में विद्या प्रचारिणी सभा की स्थापना भी पथिक की प्रेरणा से ही को गई थी। पथिक इसके वार्षिक अधिवे"ानों में भाग लेते थे, परन्तु कार्यक्रम में आगे और लोगों को रखते थे क्योंकि उनका अज्ञातवास था अर्थात् नाम व भेष बदलकर जन सेवा कर रहे थे।

---

1 शंकर सहाय सक्सेना, विजयसिंह पथिक, सामाजिक न्याय के योद्धा, पथिक शोध संस्थान, नोएड़ा, उत्तर प्रदे"ा, 2018, पृ. 28

2 बी.एन. पानगड़िया, राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1985, पृ. 22

विद्या प्रचारिणी सभा के माध्यम से पुस्तकालय, पाठ"ाला व अखाड़ा चलाये जाने लगा।[3]

ऊपरमाल (बिजौलिया क्षेत्र) भीलवाड़ा के किसान पीढ़ियों से जागीरदार के जुल्म का ि"ाकार होते आए थे। बेगार, लाग–बाग व राजनैतिक प्रताड़ना से पीडित थे। कोई भी इनके खिलाफ आवाज उठाता तो कुचल दिया जाता था। इलाके में एक खौफ का माहौल था। विद्या प्रचारिणो सभा से आस–पास के लोग जुड़ने लगे। साधु सीताराम दास, मगनलाल शर्मा, ई"वर दान आदि समाज के शुभचितंक व्यक्ति भी प्रचारिणी सभा के साथ काम करने लगे। उन्होंने पथिक से बिजोलिया किसानों को नेतृत्व करने का आग्रह किया। पथिक तो किसानों के प्रति हमे"ाा हो सहानुभूति रखते थे। उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों में बिजोलिया के किसानों की पीड़ा को महसूस कर 1916 ई. में बिजोलिया आकर युवाओं को जागृत कर अन्याय के खिलाफ लड़ने व दे"ा सेवा के लिए तैयार करना शुरू किया। साधु सीताराम दास, माणिक्यलाल वर्मा आदि को दे"ा सेवा के लिए तैयार किया। माणिक्यलाल वर्मा ने ठिकाने की नौकरी छोड़कर उमा जी का खेड़ा में ि"ाक्षा व जन–जागृति का बीड़ा उठाया।

पथिक लोगों से मिलने आस–पास के क्षेत्र में जाने लगे ताकि किसानों की वास्तविक स्थिति को समझकर उनके लिए कार्य कर सके। जहाँ भी पथिक जाते लोग उन्हें अपनी पीड़ा बताते राज्य व जागीरदार के जुल्म व कष्टों की कहानी बताते। ऐसे दौरे करके पथिक लोगों का प्रेरित करते कि दुनिया में कमजोर का कोई साथ नहीं देता, उसका शोषण ही होता है अतः ताकतवर बनो, संगठित बनो तो यह शोषण का राज्य समाप्त हो जायेगा।

पथिक ने किसानों को एकजूट करने के लिए किसान संगठन पर ध्यान दिया। यहां के बहुसंख्यक धाकड़ किसानों के संगठन बनाकर शोषण के विरूद्ध

---

[3] भूपालसिंह ओछड़ी, कर्मठ एवं निर्भिक पथिक, सम्पादक–विष्णु पंकज, श्री विजयसिंह स्मृति ग्रन्थ, हसा प्रका"ान, जयपुर, 1987, पृ. 194

संघर्ष का जो"ा भरा। सुथार, बलाई, कराड़ आदि अन्य लोग भी किसान संगठनों से जुडे। इस प्रकार अपनी नेतृत्व की क्षमता व संगठनात्मक कार्य करने की कला से पथिक उपरमाल के क्षेत्र में काफी लोकप्रिय हो गए। यहाँ की जनता में एक आ"ाा की किरण के रूप में पथिक ने अपनी पहचान बना ली। लोक उनके आदे"ा की पालना करने लगे, उन्हें महात्मा जी कहकर पुकारने लगे।

1917 में अमावस्या के दिन ऊपरमाल पंचायत बोर्ड के नेतृत्व में क्रांति का बिगुल बजा दिया। प्रारम्भ में शांतिपूर्वक वैधानिक मार्ग व साधनों से पत्र–व्यवहार करके बैठ–बेगार जैसी अनुचित मांगों से छूट की बात कही गई। इसके विपरित राजाओं से कोई राहत या उचित जबाव नहीं मिलने के कारण सत्याग्रह का मार्ग अपनाया गया। किसानां ने बेगार नहीं देने की घोषणा की। पथिक ने जनता को आह्वान किया कि युद्ध का चन्दा ना दे। किसान आपसी विवाद गाँवों में पंचायतों के माध्यम से निपटाने लगे। सूदखोर महाजनों का बहिष्कार किया गया।

पथिक ने विभिन्न दे"ाी रियासतों की शासकीय इकाईयों को अस्वीकार करके इस प्रदे"ा को राजस्थान नाम दिया। राजस्थान सेवा संघ व अपने पत्रों के माध्यम से इस भावना का प्रचार–प्रसार किया। पथिक ने अनेक कष्ट सहकर प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जन–जागृति की अलख जगाई जो पथिक को अग्रलिखित पंक्तियों में झलकती हैं।

य"ा वैभव सुख की चाह नहीं।
परवाह नही जीवन न रहे।।
यदि इच्छा है, यह है।
जग में स्वेच्छाचार दमन न रहे।

पूरे दे"ा में बिजोलिया आन्दोलन की चर्चा होने लगी। गणे"ा शंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' के माध्यम से बिजोलिया सत्याग्रह को राष्ट्रीय स्तर पर उठाया। मराठा के

माध्यम से लोकमान्य तिलक ने भी बिजोलिया आन्दोलन का प्रचार–प्रसार व समर्थन किया।[4]

बिजोलिया किसान आन्दोलन पूरे दे"ा में विभिन्न माध्यमों से चर्चा का विषय बन गया। ठिकाने द्वारा किसानों का दमनचक्र राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाि"ात किया जाने लगा। राष्ट्रीय नेताओं ने इस आन्दोलन की और ध्यान दिया। राज्य व ठिकानों के प्र"ाासन पर दबाव डाला गया कि किसानों का दमनचक्र बन्द करे तथा उन्हें राहत प्रदान की जाये।

ब्रिटिश सरकार ने एक उच्च स्तरीय आयोग का गठन किया ताकि बिजोलिया किसान आन्दोलन को शांत किया जा सके। इस आयोग में ए.जी.जी. रॉबर्ट हॉलैण्ड, उसके सचिव आगल्वी, मेवाड़ के ब्रिटिश रेजिडेण्ट विल्किसान, मेवाड़ के दीवान प्रभाष चटर्जी तथा हाकिम बिहारी लाल को सम्मिलित किया गया। आयोग ने किसान पंचायत बोर्ड के सरपंच मोतीचन्द, मंत्री नारायण पटेल व राजस्थान सेवा संघ के रामनारायण चौधरी, माणिक्यलाल वर्मा आदि से विचार–विमर्श किया। 11 फरवरी 1922 में आयोग व किसान पंचायत के बीच एक समझौता हुआ जिसमें 35 लाग–बाग समाप्त करते हुए किसानों को अनेक रियायतें दी गई। किसानों के मुकदमें वापस लिए गए, जब्त की गई भूमि लौटाई गई, शिक्षा व चिकित्सा आदि कार्यों के लिए ठिकानों को पाबन्द किया गया।[5] गाँधी जी इस आन्दोलन में खासे प्रभावित हुए। पथिक को बम्बई बुलया गया तथा आन्दोलन की पूरी जानकारी ली। पथिक के साथ गांधी ने महादेव देसाई को जाँच के लिए बिजोलिया भेजा तथा पूरी रिपोर्ट ली। देसाई की रिपोर्ट पर गांधी ने कहा था कि यदि मेवाड़ के महाराणा किसानों की समस्या का समाधान नहीं करते है तो वे

---

4 आर.पी. व्यास, आधुनिक राजस्थान का वृहत् इतिहास, राजस्थान ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2001, पृ. 238, खण्ड–2

5 आर. पी. व्यास, आधुनिक राजस्थान का वृहत इतिहास, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, खण्ड–2, 1995, पृ. 236

(गांधी) स्वयं बिजोलिया सत्याग्रह का संचालन करेंगे।[6] गांधी ने महाराणा फतेहसिंह को पत्र लिखकर किसानों की समस्या के समाधान की बात कहीं परन्तु कोई हल नहीं निकला।[7] इस प्रकार यह आन्दोलन दे"ा का पहला संगठित किसान आन्दोलन बना जो पथिक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को राष्ट्रीय नेता के रूप में पे"ा करता हैं।

पथिक एक कवि, पत्रकार, समाज सुधारक के रूप में जन–जागृति को राष्ट्रोय आन्दोलन के लिए प्रभावी रूप से आव"यक मानकर कार्य कर रहे थे। ग्रामीण बहुसंख्यक कृषक व मजदूर वर्ग को संगठित कर राष्ट्रीय हित में कार्य, करने के लिए प्रेरित कर रहे थे। संगठन की ताकत से जनता को रूबरू कर रहे थे। जनता को त्याग, बलिदान, साहस, निडरता, कर्मठता, न्याय, समानता, आदि का पाठ पढ़ाया। अपने लेखों, कविताओं, भाषणों में हिन्दी के साथ–साथ मेवाड़ की आंचलिक भाषा मेवाड़ी की प्रयोग भी पथिक द्वारा किया गया। उदाहरणणार्थ :–

(i) आरती भारत माता की

जय भारत जय जननी मैया, जय भारत जननी
धरणी सुख करणी, भय संकट हरणी।
प्राणी मात्र का तेरे घर में, है समान अधिकार
सम हैं तेरे सन्मुख, पंडित, सूद, गँवार।।[8]

(ii) *लहरावणों, लहरावणो झण्डों यो करसाणा को।*[9]

बिजोलिया सत्याग्रह में पहली बार पुरुषों के साथ–साथ स्त्रियों एवं बच्चों ने भी भाग लिया। देशभक्ति गीतों से लोगों में विश्वास जगाया जाने लगा भंवरलाल स्वर्णकार की कविता गाकर गाँव–गाँव अलख जगाई गई।

मान–मान मेवाड़ा राणा, प्रजा पुकारे रे।

---

6 वही, पृ. 25

7 रामनारायण चौधरी, नवजीवन, उदयपुर अंक, ''पथ्किा जी जैसा और नहीं'', दिनांक 12.03.1982

8 ऊपरमाल किसान भजनावली, संग्रहकर्त्ता,ऊपरमाल किसान पंचायत, राजस्थान पंचायत भवन, बिजोलिया, पृ. 3

9 उपरोक्त,पृ.10

रूस जार को पतो न लाग्यो, सुण राणा फतमाल रे।। [10]

इस प्रकार दे"ा में पथिक ने सबसे पहले अि"ाक्षित किसानों को संगठित कर शांतिपूर्वक कष्ट सहते हुए अपनी मांगों के लिए सत्याग्रह करने की तकनीकि सिखाई। बाद में गांधी ने राष्ट्रीय स्तर पर में सत्याग्रह एवं अहिंसा पर आधारित कोई आन्दोलन किए। कुछ समय प"चात् असहयोग आन्दोलन में गांधी ने सत्याग्रह व अहिंसा को अपनाया जो काफी कारगर सिद्ध हुई।

अतः पथिक एक कु"ाल संगठन कर्त्ता, राष्ट्रीय प्रेम, किसानों से लगाव, संघर्ष व त्याग की प्रतिमूर्ति के रूप में अज्ञात रूप में रखकर भी जनता के कष्टों को दूर करने में सरकारों को मजबूर करते हुए दिखाई देते हैं। बिजोलियाँ किसान आन्दोलन की तर्ज पर ही कलांतर में चम्पारन सत्याग्रह, खेड़ा किसान आन्दोलन, बारदोली आन्दोलन आदि संगठित आन्दोलन दे"ा में हुए। हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि पथिक से प्रेरणा लेकर समाज के उपेक्षित, प्रताड़ित, शोषित पीड़ित वर्ग का सहयोग कर राष्ट्र की मुख्य धारा में जोड़े। त्याग, बलिदान व साहस के साथ कार्य कर एक आद"ार्ा समाज व विकसित राष्ट्र के निर्माण में अपनी महत्ती भूमिका अदा करें। यहीं क्रांति पुरुष पथिक को सच्ची श्रृद्धाजंली होगी।

---

[10] बी. एल. पानगड़िया, राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1985, पृ. 24